Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

महिला कथाकारों के लेखन की पृष्ठभूमि

डॉ. माया गोला
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा, परिसर अल्मोड़ा, उत्तराखंड।

Article Info
Volume 4 Issue 5
Page Number : 185-190

Publication Issue :
September-October-2021

Article History
Accepted : 01 Sep 2021
Published : 15 Sep 2021

शोधसारांश– मानविकी विज्ञान, मीडिया और चिंतन प्रायः सभी क्षेत्राों में इक्कीसवीं सदी में आधुनिकता का विकास हो रहा है। आज हम इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक को समाप्त कर द्वितीय दशक के अंत में पहुंच चुके हैं। इसी के साथ हमारे देश, समाज एवं साहित्य का तीव्र गति से आधुनिकीकरण हो रहा है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। क्योंकि समाज में चारों ओर जो भी घटित हो रहा है, उसी को माध्यम बनाकर साहित्यकार अपनी लेखनी द्वारा उन घटनाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अभिव्यक्त करता है। इक्कीसवीं सदी में आधुनिकरण के साथ ही साथ हमारा साहित्य भी आधुनिकता के शिखर पर पहुंच गया है।

मुख्य शब्द– इक्कीसवी सदी, महिला कथाकार, समाज एवं साहित्य आदि।

इक्कीसवीं सदी के आरंभ में मुक्त स्त्राी विमर्श से प्रेरित कहानियों का समय रहा है और उससे एक नई पीढ़ी उभरी जो अभिव्यक्ति में बेझिझक थी। कलमकार फाउंडेशन दिल्ली के एक पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में इस बारे में चित्राा मुद्गल जी ने स्वीकार किया है कि ''हमने जब लिखना आरंभ किया था तो मुट्ठी भर कहानीकार ही थी, आज तो लेखिकाओं का झुंड का झुंड कहानियां लिख रहा है और बड़ी बेबाकी से देह की चीर फाड़ कर रहा है।'' उनके इस वक्तव्य को सुनकर कार्यक्रम की उद्घोषिका गीताश्री ने भावुक होकर कहा था ''और ऐसी लेखिकाएँ गालियां भी तो खा रही हैं।''

कहने की जरूरत नहीं है कि इस श्रेणी में रमणिका गुप्ता जी, मैत्रोयी पुष्पा, मनीषा कुलश्रेष्ठ, सोनाली सिंह, जयश्री रॉय आदि को लिया जा सकता है। मैत्रोयी पुष्पा जी ने साहित्य के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं की अनकही बातों को बहुत सशक्त रूप से अपने केंद्र में लिया है। मनीषा कुलश्रेष्ठ और जयश्री राय कहानी में मनमोहक माहौल बनाने में माहिर हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्राता के रूप में रायपुर में रमणिका जी और मैत्रोयी जी का साहित्यिक है, जो सिर्फ स्त्राी की कामनाओं को निर्दयता से चित्रिात करते हैं? वड़ोदरा के एक गुजराती कवि ने भी मुझे बताया कि गुजराती साहित्य के सेमिनारों में हमें प्रेम कविता पढ़ने की मनाही है। यह चर्चा इसलिए जरूरी हो गई है क्योंकि महिलाओं को अपनी स्त्राी भावनाओं को व्यक्त करने का अधिकार नहीं है। जो लोग इस अधिकार को जबरन छीन रहे हैं, उनकी कहानियों में नारी शरीर से जुड़ी सच्चाई को खुले दिमाग से साहित्य में जगह देनी होगी, लेकिन बिना बात अश्लीलता की बात करना भी स्वीकार्य नहीं होगा।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों से जुड़े होने के कारण कहानीकार समलैंगिक समस्या जैसे विभिन्न विषयों पर लिख रहा है, उदाहरण के लिए संगीता कांडली की 'कथादेश' में प्रकाशित कहानी 'फीनिक्स' और नीलिमा सिन्हा की 'हंस' में प्रकाशित 'मंगला गौरी'। एमएनसी में मैनेजमेंट का काम कोई मुसलमान तेज करता है तो दूसरे साथियों को जला देता है या कहता है कि हम आपको इस मुसलमान से बचाएंगे, पर्यावरण संरक्षण की बात करें. 'हंस' में प्रकाशित 'सफाई' उन कहानियों का प्रारंभिक काल था, जिनसे कहानियों में पर्यावरण चेतना का संचार हुआ। इस सदी की कहानियों की विविधता में, मैं अपनी दो कहानियों का नाम एक सरोगेट मदर की नश्वर पीड़ा पर आधारित रखना चाहूंगी, 'रस– प्रवाह' और 'गिनी पिग्स', जो एक नैदानिक की पहली हिंदी कहानी भी हो सकती है। यूं कहें कि नौ–दस साल पहले स्त्री–पुरुष के रसीले संबंधों का दौर अधिक था, इसलिए समाज के विभिन्न पहलुओं पर लिखी गई कहानियों के कहानीकार आलोचकों की सूची में नहीं मिल पाते थे।

हिन्दी साहित्य में लेखकों की कहानियों को रेखांकित न करके मैं इस सदी की कुछ ऐतिहासिक घटनाओं को ले रही हूँ, जो इक्कीसवीं सदी की महिलाओं की कहानियों के परिदृश्य को प्रतिबिम्बित करेंगी। महिलाओं की चर्चाओं की रचनाओं का हिंदी में अनुवाद करके ''हाशिए की महिला'' उन कटु सत्यों को बता रही है कि एक महिला को हाशिये पर जाने की जरूरत क्यों है। इस श्रंखला के तीन और ग्यारह भाषाओं के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। अब तक जितने भी अंक प्रकाशित हुए हैं, उन्होंने स्त्री अंगों से जुड़े सवालों को बड़ी ही शिद्दत से पेश कर तेलुगू लेखकों को पछाड़ दिया है.. ओल्गा सीधे 'अयोनी' कहानी द्वारा सवाल उठाती हैं– 'उन सांपों को छुरा मारकर मार डालो.' जो किसी खास अंग की वजह से छोटी बच्चियों का अपहरण करते हैं। 'चंद्रलता' अपनी कहानी 'बैलेंस शीट' से वर्षों से पुरुषों और महिलाओं के बीच खोए हुए बैलेंस शीट को खोजने का एक सफल प्रयास करती है – वह भी एक कार्यालय की खोई हुई बैलेंस शीट के माध्यम से। दो वेश्यावृत्ति की नायिकाओं की भीषण हँसी से आपका दिल दहल जाएगा क्योंकि उन्हें एड्स है, वे हँस रहे हैं, ''अब वे आजाद हैं, वे रात में भी कहीं भी घूम सकते हैं क्योंकि कोई आदमी उन्हें परेशान नहीं करेगा।''

तेलुगू भाषी महिलाएं स्त्री के इस विशेष अंग पर खुलकर चर्चा कर पाती हैं, इसका कारण उनके समाज की एक विशेष परंपरा को जाता है।'' हालांकि, कर्नाटक में जैसे–जैसे शिक्षा बढ़ी है, ऐसे आयोजन बंद हो गए हैं। हैदराबाद में रहने वाली एक लेखिका ओल्गा के अनुसार, "कुछ ही वर्षों में इन आयोजनों को बंद कर दिया गया क्योंकि शिक्षा के कारण लोग समझ गए थे कि बेटी का रिश्ता केवल शोरगुल वाली बात नहीं है, बल्कि जैसे–जैसे पैसा बढ़ता गया है दस–पंद्रह वर्षों से लोग इस पर्व को स्वीकार कर धन का प्रदर्शन करने लगे हैं।

गुजराती से हिंदी अनुवाद में दो प्रतीकात्मक कहानियां हैंः 'ताश की बाजी' में, एक लड़की दरवाजे खोलती है, सभी पुरुष की ओर खुलते हैं, लेकिन आखिरी दरवाजा वह अपने लिए खोलती है, वह सांस लेती है और सुहास ओझा की कहानी में एक छोटी सी नौकरानी होती है। घर में पार्टी के दिन घर के मालिक को यह बात अच्छी नहीं लगती।

अस्मिता, मैंने महिला बहुभाषी मंच के वडोदरा के अरविंद आश्रम के सेमिनारों में इस विद्रोह की धड़कन सुनी और नमिता सिंह के प्रोत्साहन पर मैंने देश भर के शीर्ष लेखकों से रचनाएँ माँगकर पुस्तकों का संपादन किया। ''धर्म के आधार पर महिला''और 'वेंकटसानी और नारी' महाश्वेता देवी, की विशिष्ट कहानियाँ हैं, जो पिता और भाइयों की इच्छा से आंध्र प्रदेश में पुजारियों द्वारा धर्म के नाम पर नाबालिग लड़कियों के शोषण की कहानी है।

2008 में शुरू हुए कलम और कागज के इस संगठित विद्रोह ने केवल पृष्ठभूमि बनाई थी और यह भी घोषित किया था कि यह सभी धर्मों की करोड़ों महिलाओं का रोना है। हम सभी ने 7–8 साल बाद देखा कि महिलाएं धर्म की अवधारणाओं की मजबूत दीवार को तोड़ने के लिए उतर आई हैं, चाहे वह शनि शिंगणापुर का मंदिर हो या मुंबई में हाजी अली की दरगाह। लेखक अन्नदा पाटनी ने यह भी बताया कि जैन मुनियों, जो अब तक साध्वियो को नहीं पहचानते थे, उन्हें वही सम्मान देना शुरू कर दिया है और उच्च पदों पर कब्जा करने के बारे में सोचने लगे हैं।

आप चाहें तो इसे इक्कीसवीं सदी की दूसरी प्रमुख साहित्यिक घटना मान सकते हैं, जिसकी प्रेरणा मैंने वडोदरा और अहमदाबाद में स्थापित की – अस्मिता। यानी 15–20 शिक्षित महिलाओं ने अस्मिता के नाम पर इकट्ठा होकर पौराणिक नारी पात्राों और उनकी स्थितियों पर विचार किया और यह देश के निर्माताओं से जुड़कर मील का पत्थर बन गया।

इस सदी में साहित्यिक इतिहास लिखने वाली तीसरी ऐतिहासिक संगठित महिला की रचना हुई, इसी को ध्यान में रखते हुए कमर मेवाड़ी की पत्रिाका 'संबोधन' ने स्वाति तिवारी के संपादन के तहत 'लिव–इन रिलेशनशिप' पर एक विशेष अंक प्रकाशित किया। लिव–इन आज के महानगर में रहने वाली पीढ़ी को मार्गदर्शन की जरूरत है। इस सदी में लिखी गई इन कहानियों ने रिश्ते को लेकर काफी चर्चा दी है कि जब दो लोग एक साथ रहते हैं तो उस समय कोई रिश्तेदार एक साथ कैसे नहीं होता या ऐसे रिश्ते में कानून बन जाता है। महिला के जाने के बाद भी वह असुरक्षा महसूस करती है। यह इस मुद्दे की उपलब्धि थी कि कई लेखकों ने इस बात पर जोर दिया कि जब लिव–इन के लिए विवाह कानूनों की खोज की जानी है, तो विवाह ही एक पुरुष और महिला के साथ रहने की एकमात्रा प्रणाली है।

2006 में बने घरेलू हिंसा कानून में लिव–इन रिलेशनशिप में रहने वाली महिलाओं को भी कानूनी पत्नी को सुरक्षा का अधिकार दिया गया था। 2008 में, सुप्रीम कोर्ट ने लिव–इन रिलेशन से पैदा हुए बच्चों को वही अधिकार दिए जो कानूनी विवाह से पैदा हुए थे। जाहिर है इसमें मीडिया या साहित्यिक योगदान है। इस सदी में एक दो कहानियों में इस कानून को नकारने की बात भी उठाई गई है। आकांक्षा पारे ने इस सदी की नई शैली यानी आईटी प्रोफेशनल शिफ्ट कंट्रोल = डिलीट 'हंस' से पहला पुरस्कार, पर आधारित कहानी लिखी है। यह बताने का प्रयास था कि आईटी क्षेत्रा में काम करने वाले लोग बेतरतीब जीवन जीते हैं और वीडियो गेम के दीवाने होने की हद तक दीवाने हैं। गनीमत है कि इस सेक्टर में कुछ ही दीवाने हैं, लेकिन इस नई पीढ़ी की सच्चाई उसमें थी।

चार साल पहले पांच आई.टी. पेशेवरों ने एक साहित्यिक वेब साइट शुरू की जिसकी हिंदी अधिकारी भी एक महिला वीणा वत्सल सिंह हैं। उन्होंने कहानी प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें नई पीढ़ी के लेखन और आज के पाठक को बेशकीमती प्रज्ञा रोहिणी की कहानी 'तकसीम' का जिक्र करते हुए समझना होगा। लोग समझते हैं कि आज की पीढ़ी दुनिया से असंबद्ध है, उसे किसी की परवाह नहीं है, लेकिन इस प्रतियोगिता में कोई प्रेम कहानी या पति, पत्नी और महिलाओं की कहानी नहीं चुनी गई है, पाठक इस कहानी के सनकी आईटी पेशेवर के बारे में चिंता करता है जो फांसी से पहले निंजा वीडियो गेम का अनुरोध करता है। साम्प्रदायिकता के जहर को खत्म करने के लिए इस नेट पर साहित्यिक रुचि के पाठक को पूरे समाज, उसकी शांति की चिंता है। तभी सवाल जीत गया। यह इस सदी की कहानी है, जिसमें महिलाओं के लेखन में सांप्रदायिकता के जहर को खत्म करने का आह्वान किया गया है। इस कहानी ने साहित्य के जानकारों को यह संदेश भी दिया कि ऑनलाइन मैगजीन या वेबसाइट चलाने या लिखने वाले लापरवाह नहीं हैं।

इस सदी में लिखी गई किरण सिंह ने एक दुर्लभ कहानी 'द्रौपदी पीक' हंस, लिखी, जिसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि कोई ऐसी कहानी कैसे लिख सकता है जो इतनी मजबूत, इतनी जटिल, इतनी विषमताओं को समेटे हुए हो। इसमें है रसूलपुर की डांसिंग गर्ल, नागा बनने की समस्या, उनकी अंदरूनी नफरत भरी राजनीति, लोग खाली टिन के डिब्बे और प्लास्टिक के थैले और रैपर पहाड़ों पर फेंक कर पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। दूसरी राजनीति है बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की घिनौनी साजिश–उनके विज्ञापन, ताकि लोग द्रौपदी पीक यानि माउंट एवरेस्ट की यात्राा पर जाने के रोमांच का आनंद लेने के लिए उत्सुक हों और अपने पर्वतारोहण के लिए आवश्यक वस्तुओं को बेच दें। यात्राा से पहले, यात्राी को यह लिखने के लिए कहा जाता है कि यदि उसकी मृत्यु हो जाती है, तो यह प्रशासन की जिम्मेदारी नहीं है कि

वह उसके शव को ढूंढे और उसे उसके परिवार के सदस्यों तक पहुंचाए। मुझे लगता है कि यह एकमात्रा ऐसी कहानी होगी, जिसके प्रकाशन के तुरंत बाद 'हंस' में इस पर 2–3 पेज का लेख था।

नमिता सिंह जी ने कहा था, ''महिला के विभिन्न हिस्सों की कहानियों को लेकर आप महिला प्रवचन कैसे बनाएंगे?''। बाद में प्रीतपाल कौर ने 'पैर' की समस्या पर एक कहानी भी लिखी है कि महिलाओं के अलग–अलग कपड़ों में दिखने वाले अर्ध–नग्न 'पैरों' से समाज कैसे परेशान है? वर्ष 2017 में एक कहानी संग्रह आया 'आप ऊपर ही बिराजे', यानि किस तरह मेहनती और ईमानदार महिलाओं को इस व्यवस्था से निकाल दिया जाता है, जैसे पहाड़ों पर धार्मिक देवी–देवता बस जाते हैं। इसमें महिलाओं से जुड़ी समस्याओं से जूझ रही एक महिला की कहानी है।

नई पीढ़ी की योगिता यादव, आकांक्षा पारे, इंदिरा नाग और सिनीवाली शर्मा, डॉ. नीरज शर्मा, अंजू शर्मा की कहानियों का अपना एक अंदाज और माहौल है. योगिता की कहानी 'क्लीन चिट' में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद सरदार परिवारों की विधवाओं का वर्णन है। हत्यारों को कितनी क्लीन चिट दी जाती है। 'इंद्रप्रस्थ भारती' के वार्षिक अंक में प्रकाशित सिनीवाली की कहानी 'क्रताब पूर्वाग्रह' बेहद चौंकाने वाली है क्योंकि इसमें एक भी महिला चरित्रा नहीं है और यह पाठकों के सामने क्षेत्रीय भाषा के शब्दों के साथ गांव के चुनावी माहौल को जीवंत कर देती है। मैत्रोयी जी ने भी इस कथा की प्रशंसा की है। हुस्न तब्बसुम निहान की तरह वह न केवल दुनिया को मुस्लिम महिलाओं की समस्याओं के बारे में बता रही हैं, उन्होंने हिंदी साहित्य को कुछ सार्थक कहानियां भी दी हैं। प्रतिभा की ताजा कहानी 'बारिश के देवता' चेरापूंजी की परिस्थितियों के बारे में बताने वाली एक अनोखी कहानी है। अंजू शर्मा ने आज के परिवेश में ग्रहणी और स्वतंत्रा महिला के परिचित संघर्ष को अपनाकर परिवार व्यवस्था की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए 'नेमप्लेट' कहानी लिखी है। वीणा वत्सल सिंह की 'इरावती' में प्रकाशित कहानी में वन विभाग का वर्णन है, जो महिलाओं के लेखन में पहले नहीं पढ़ा गया है। इससे पहले कभी कोई महिला कोयला खदानों पर इतनी प्रामाणिक कहानी नहीं लिख सकती थी। ''पके तो की लोरेन'' या कहानी 'निकली अदालत' इच्छामृत्यु, मर्सी किलिंग, पर चर्चा करेगी।

निष्कर्ष– 21वीं सदी की महिला कहानी कारों की कहानियों में 21वीं सदी में हो रहे घटनाक्रम का वहां मिलता है। जिस तरह से समाज में आजकल महिलाओं पर अत्याचार हो रहा है, जिस तरह से अश्लीलता को बढ़ावा दिया गया है, किसी सदी की कहानियों में वह सभी दृश्य प्रतिबिंबित होते हैं। कहानियों में अश्लीलता, धन प्रदर्शन, शोषण, लिव इन रिलेशनशिप, घरेलू हिंसा, परिवार से अलगाववाद आदि बहुलता से दिखाई देता है।

संदर्भ

1 http%//www-rachanakar-org
2 आशारानी व्होरा (संपा.), भारतीय भाषाओं में महिला लेखन (2005), श्री नटराजन प्रकाशन, दिल्ली,पृ.सं–13
3. नीरजा माधव, हिन्दी साहित्य का ओझल नारी इतिहास (1857–1947), (2014), सामयिक बुक्स, दिल्ली, पृ.सं–97–98.
4 नीरजा माधव, हिन्दी साहित्य का ओझल नारी इतिहास (1857–1947), (2014), सामयिक बुक्स प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं 108 109.
5 चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, मेरी प्रिय कहानियाँ, (2008), पुर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, पृ.सं – 64.
6 gadyakosh.org/हिंदी के विचार जगत में एक नया पथ प्रदर्शन, ममता कालिया
7 ममता कालिया (संपा.), नयी सदी की पहचानः श्रेष्ठ महिला कथाकार, (2009), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं 4.
8 him.wikipidia.org/wiki
9 webdunia.com, तीन बार विचार कर लिखती हूँ कहानी
10 सं–ममता कालिया, 'नयी सदी की पहचान श्रेष्ठ महिला कथाकार' (मामला आगे बढेगा अभी – चित्रा मुदगल), (2009), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.सं. 51
11 सुधा अरोड़ा, अन्नपूर्णा मंडल की आखिरी चिट्ठी महानगर की चुनिन्दा कहानियाँ, ('दमनचक्र'),(2014),साहित्य भण्डार, इलाहाबाद, पृ.सं–55
12. गूगल सर्च आदि।